।। अर्हम् ।।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति, श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर)

दूरभाष : 01565–224600,224900

ई–मेल : jstsdgh01565@gmail.com

अष्टमाचार्य कालुगणी का 134वां जन्मोत्सव
कालुगणी भविष्यदृष्टा आचार्य थे – आचार्य महाप्रज्ञ
अणुव्रत आन्दोलन ने पूरे किये 61 वर्ष

–अंकित सेठिया (मीडिया सहसंयोजक)–

श्रीडूँगरगढ़ 16 फरवरी : 1949 में सरदारशहर की धरा से आचार्य तुलसी के द्वारा प्रारंभ हुए अणुव्रत आन्दोलन ने आज 61 वर्ष पूरे किये। देश को नैतिक मूल्यों एवं चरित्र उत्थान के साथ आजादी का सही अर्थ समझाने वाले आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन की वजह से जन–जन तक पैठ बनाई थी और देश के नेतृत्वकर्ता राजनेताओं को अनेक समस्याओं का समाधान दिया था। चरित्र उत्थान का यह आन्दोलन एक अलग ही पहचान लेकर संपूर्ण भारत के दिग्गजों में चर्चित हुआ। तेरापंथ के अष्टमाचार्य कालुगणी के 134 वें जन्मोत्सव के अवसर पर अणुव्रत आन्दोलन के 61 वर्ष सम्पूर्ण होने पर जनसमुदाय को सम्बोधित करते हुए अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि आज के दिन कालुगणी का जन्म हुआ। जो तेरापंथ के भाग्योदय का जन्म साबित हुआ। तेरापंथ के पूर्वज आचार्यो ने धर्मसंघ के विकास में बहुत कुछ किया। परन्तु ज्ञान, नया चिंतन और युग की गति के साथ चलने की सूझ बूझ अष्टमाचार्य कालूगणी दी। उनका जन्म दिन तेरापंथ के विकास का जन्म दिन है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि कालुगणी भविष्यदृष्टा आचार्य थे। कुछ ही लोग ऐसे होते हैं जो भविष्य को देखते हैं, ज्यादातर वर्तमान को ही देखते हैं। जो अगले सौ वर्ष, 5 सौ वर्ष की नहीं सौचते उनका चिंतन सीमित रहता है और वे लोग बड़ा काम भी नहीं कर सकते। उन्होने कहा कि कालुगणी के जन्म दिन पर अनेक कार्य शुरु हुए हैं। इस दिन ही आचार्य तुलसी ने अणुव्रत के द्वारा धर्म क्रांति की थी। जिस धर्म की पृष्ठ भूमि में नैतिकता नहीं होती वह कभी सफल नहीं हो सकता। तेरापंथ और अणुव्रत को व्यापक रुप देने वाले आदर्श साहित्य संघ का उद्‌भव भी आज के दिन हुआ और दीक्षा के लिए प्रशिक्षण प्राप्त करने वाली मुमुक्षु बहिनों को तैयार करने के लिए पारमार्थिक शिक्षण संस्था का शुभारंभ भी आज के दिन हुआ। इसलिए ऐसे महान गुरु का जन्म दिन हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। आज के दिन संकल्प करें कि नैतिकता का जीवन जीयेंगे, धर्मसंघ को उंचाईयां देने वाले व्यक्तित्वों का निर्माण करेगें और अच्छे चिंतन को, अच्छे कार्यो को व्यापक बनाने में अपनी शक्ति नियोजित करेगें। उन्होने कालुगणी के व्यक्तित्व पर आचार्य तुलसी द्वारा रचित कालुयशो विलाश को राजस्थानी भाषा का महत्वपूर्ण ग्रंथ बताया।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि अणुव्रत के द्वारा तेरापंथ की व्यापक पहचान बनी। आचार्य तुलसी ने राष्ट्र की समस्याओं के समाधान मे अणुव्रत को मुखर किया था। उन्होने अष्ठमाचार्य कालुगणी के प्रसंगों को रौचकता से प्रस्तुत किया।

अंकित सेठिया
मीडिया संयोजक/सहसंयोजक